अध्याय 36

एक उत्तराधिकारिणी का विवाह

गिनती इस वर्णन के साथ समाप्त होती है कि परमेश्वर ने किस प्रकार देश में निज भाग के एक नियम में सुधार करते हुए मूसा के एक प्रश्न का उत्तर दिया। जब मूसा ने परमेश्वर के सामने प्रश्न रखा, तो उसका उत्तर समस्त इस्राएल के लिए नियम बन गया। अध्याय और पुस्तक, यह कहकर समाप्त होती है कि मूसा ने लोगों को जो भी नियम दिए थे, वे सभी परमेश्वर की ओर से थे।

सलोफाद की बेटियों के पिता के संपत्ति के अधिकार दिए जाने के परमेश्वर के पिछले निर्णय से विशेष प्रश्न उत्पन्न हुआ (अध्याय 27)। यदि इन बेटियों में से एक ने अन्य गोत्र के व्यक्ति से विवाह किया, तो मनश्शे के पास जो भूमि थी, वह उसके पति के गोत्र की संपत्ति बन जाएगी। परमेश्वर ने निर्णय दिया कि एक उत्तराधिकारिणी अपने गोत्र के भीतर ही विवाह कर सकती थी। इस तरह, प्रत्येक गोत्र का मूल आवंटन गोत्र के भीतर ही रहेगा।

इसके बाद, अध्याय का केंद्र भूमि पर बना रहता है। परमेश्वर ने इस बात की पुष्टि की और कहा कि "इस्राएलियों के एक-एक गोत्र के लोग अपने-अपने भाग पर बने रहें" (36:9)। ये ऐसे लोगों के लिए उत्साहवर्धक शब्द थे जो इतने वर्षों से प्रतिज्ञा किए गए देश में प्रवेश करने की आशा कर रहे थे।

उठाया गया प्रश्न (36:1-4)

[1]फिर यूसुफियों के कुलों में से गिलाद, जो माकीर का पुत्र और मनश्शे का पोता था, उसके वंश के कुल के पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुष मूसा के समीप जाकर उन प्रधानों के सामने, जो इस्राएलियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे, कहने लगे, [2]"यहोवा ने हमारे प्रभु को आज्ञा दी थी, कि इस्राएलियों को चिट्ठी डालकर देश बाँट देना; और फिर यहोवा की यह भी आज्ञा हमारे प्रभु को मिली, कि हमारे सगोत्री सलोफाद का भाग उसकी बेटियों को देना। [3]पर यदि वे इस्राएलियों के और किसी गोत्र के पुरुषों से ब्याही जाएँ, तो उनका भाग हमारे पितरों के भाग से छूट जाएगा, और जिस गोत्र में वे ब्याही जाएँ उसी गोत्र के भाग में मिल जाएगा; तब हमारा भाग घट जाएगा। [4]और जब इस्राएलियों की जुबली होगी, तब जिस गोत्र में वे ब्याही जाएँ उसके भाग में उनका भाग पक्की रीति से मिल जाएगा; और वह हमारे पितरों के गोत्र के भाग से सदा के लिये छूट जाएगा।"

आयतें 1, 2. मनश्शे गोत्र के प्रधानों द्वारा भूमि के स्वामित्व का प्रश्न उठाया गया था, वह गोत्र जिससे सलोफाद था (27:1)। ये पुरुष **गिलाद, जो माकीर का पुत्र और मनश्शे का पोता उसके वंश के कुल के पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुष थे**। माकीर एक अरामी रखैली से उत्पन्न हुआ मनश्शे का पुत्र था (1 इतिहास 7:14) जिसने माकीर कुल की स्थापना की थी। माकीर गिलाद का पिता बना, जिससे गिलादी (26:29) आए। माकीरी और गिलादी मनश्शे के उस आधे गोत्र का भाग थे जो यरदन के किनारे बसे थे (32:39, 40)।

गिलादियों के प्रधानों ने **मूसा** और इस्राएल के अन्य प्रधानों को विनम्रता से और भिन्न तरीके से संबोधित किया, मूसा को **हमारा प्रभु** कहा। उन्होंने परमेश्वर के पिछले निर्णय की सराहना की जिसमें कहा गया था कि सलोफाद की बेटियां उसकी भूमि में भागी बन सकती हैं क्योंकि उसका कोई पुत्र नहीं था।

आयत 3. इन लोगों को एक समस्या की आशा थी: यदि ये बेटियां **अन्य गोत्रों** में से किसी एक गोत्र के पुरुष से **विवाह** कर ले तो **उनके पितरों का भाग** उनके पति का हो जाएगा और इसके बाद वह भाग उसके गोत्र की भूमि का भाग हो जाएगा।

आयत 4. यहाँ तक कि **जुबली** भी इस स्थिति को ठीक नहीं कर पाएगी; केवल वह भूमि जो बेच दी गई थी (वह भूमि नहीं जो **निजभाग के** माध्यम से हस्तांतरित हो गई थी) वह अपने असली स्वामी के पास लौट आएगी।[1] जुबली का वर्ष प्रत्येक पचास वर्ष में आता था। इस वर्ष के दौरान प्रत्येक व्यक्ति को "उसकी निज भूमि" में लौट आना था (लैव्य. 25:10; देखें 25:8-17), और जो भूमि बेच दी गई थी वह अपने असली स्वामी के पास लौट आती थी। इस नियम के अनुसार, भूमि को अनन्तकाल के लिए नहीं बेचा जाना था। बल्कि, एक भाव से, इसे अगले जुबली वर्ष तक के समय तक किराए पर दिया जाता था।

समस्या वास्तविक थी। एक गोत्र के लिए यह महत्वपूर्ण था कि वह आर्थिक और धार्मिक दोनों कारणों से अपनी भूमि को बनाए रखे। एक आर्थिक दृष्टिकोण से, चूंकि "एक गोत्र की जीविका उसकी भूमि से जुड़ी थी" इस अवसर पर जो निर्णय लिया गया उसने "ध्यान देने योग्य प्रभाव" डाला होगा।[2] धार्मिक रूप से, "इस्राएली समाज में पारिवारिक सम्पत्ति का अधिकार उच्च मूल्यों में से एक था। … क्योंकि भूमि वाचा का उपहार था, तो प्रत्येक परिवार का भाग उसका वाचा में का भाग था।"[3]

प्रश्न का उत्तर दिया जाना (36:5, 6)

[5]तब यहोवा से आज्ञा पाकर मूसा ने इस्राएलियों से कहा, "यूसुफियों के गोत्री ठीक कहते हैं। [6]सलोफाद की बेटियों के विषय में यहोवा ने यह आज्ञा दी है, कि जो वर जिसकी दृष्टि में अच्छा लगे वह उसी से ब्याही जाए; परन्तु वे अपने मूलपुरुष ही के गोत्र के कुल में ब्याही जाएँ।"

आयत 5. मूसा परमेश्वर के सामने मामला लेकर गया और फिर ईश्वरीय उत्तर की सूचना दी: **"यूसुफियों के गोत्री ठीक कहते हैं।"** मनश्शे के गोत्र के प्रधानों की चिंता परमेश्वर की दृष्टि में उचित थी।

आयत 6. इस समस्या का हल यह था कि **सलोफाद की बेटियां अपने मूलपुरुष ही के गोत्र के कुल में ब्याही जाएँ**। निस्संदेह, मूसा की प्रतिक्रिया ने मनश्शे के गोत्र के प्रधानों द्वारा उठाए गए मुद्दे के लिए एक संतोषजनक उपाय प्रदान किया। इन प्रधानों को आश्वस्त किया जाता है, कि "भूमि स्वामित्व की गोत्रीय प्रणाली बरकरार है, जबकि बेटियों को उन सीमाओं के भीतर पति चुनने की स्वतंत्रता है।"[4]

नियम का सामान्य किया जाना (36:7-9)

7"और इस्राएलियों के किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में न मिलने पाए; इस्राएली अपने-अपने मूलपुरुष के गोत्र के भाग पर बने रहें। 8और इस्राएलियों के किसी गोत्र में किसी की बेटी हो जो भाग पाने वाली हो, वह अपने ही मूलपुरुष के गोत्र के किसी पुरुष से ब्याही जाए, इसलिये कि इस्राएली अपने-अपने मूलपुरुष के भाग के अधिकारी रहें। 9किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में मिलने न पाए; इस्राएलियों के एक-एक गोत्र के लोग अपने-अपने भाग पर बने रहें।"

आयत 7. यहाँ पर अब एक सामान्य नियम बताया गया है जिसका पालन किया जाना था, केवल मनश्शे के गोत्र या सलोफाद की बेटियों के द्वारा ही नहीं बल्कि सभी गोत्रों के द्वारा। नियम की मांग थी कि प्रत्येक गोत्र के भाग को अविच्छेद्य होना था। परमेश्वर ने कहा, **"इस्राएलियों के किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में न मिलने पाए।"** यह कि परमेश्वर की मंशा भूमि के उन परिवारों, कुलों और **गोत्रों** के साथ बने रहने के लिए थी, मूल रूप से यह जिनका भाग थी, जो कि जुबली वर्ष से सम्बन्धित नियमों से स्पष्ट है। भूमि अब भी परमेश्वर की ही थी, परन्तु वह इस्राएल के कुलों के उपयोग के लिए इसे उन्हें सौंप रहा था। जो कोई इसे उस गोत्र से छीन लेता है जिसे यह दी गई थी तो वह ईश्वरीय दण्ड के अधीन होगा (देखें 1 राजा. 21:16-19; मीका 2:1-5)।[5]

आयत 8. यह सुनिश्चित करने के लिए कि भूमि गोत्र में ही बनी रहे, **वह हर एक बेटी** जिसके **पास** निज **भूमि का भाग** था उसे अपने ही गोत्र के भीतर रहना था। इस बात को प्राप्त करने के लिए एक उत्तराधिकारिणी **अपने ही मूलपुरुष के गोत्र के किसी पुरुष से ब्याही जाए**। यद्यपि उसकी भूमि अब भी उसके पति की सम्पत्ति बन गई, परन्तु उसका **निज भाग** उसके गोत्र में ही रहेगा।

आयत 9. यदि इस नियम का पालन किया गया, तो प्रत्येक गोत्र की निज भूमि उसके पास ही बनी रहेगी। कोई भी **भाग एक गोत्र से दूसरे गोत्र तक हस्तांतरित न होने पाए**, परन्तु प्रत्येक परिवार **अपने-अपने भाग पर बना रहा**।

नियम का पालन किया जाना (36:10-12)

[10]यहोवा की आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी सलोफाद की बेटियों ने किया। [11]अर्थात् महला, तिर्सा, होग्ला, मिल्का, और नोआ, जो सलोफाद की बेटियाँ थीं, उन्होंने अपने चचेरे भाइयों से विवाह किया। [12]वे यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलों में ब्याही गईं, और उनका भाग उनके मूलपुरुष के कुल के गोत्र के अधिकार में बना रहा।

आयत 10. सलोफाद की बेटियों ने मूसा की बातों का पालन किया। उनकी आज्ञाकारिता को नई पीढ़ी के लिए नमूना माना जा सकता है। यह इस्राएल के भविष्य के लिए अच्छा था। हालाँकि, जो लोग इस्राएल के इतिहास को जानते हैं, वे जानते हैं कि आज्ञाकारिता की अवधि (जैसे कि निर्गमन के बाद के अध्यायों में और गिनती के पहले अध्यायों में) के बाद कभी-कभी अनाज्ञाकारिता का समय आता था (जैसे कि गिनती के मध्य अध्यायों में पाया जाता है)।

आयतें 11, 12. पाँचों स्त्रियों के नाम फिर से देने के बाद (देखें 27:1), शब्द हमें बताता है **सलोफाद की बेटियों** ने मनश्शे के गोत्र के भीतर ही विवाह किया। उनके **चचेरे भाइयों** से विवाह करने के द्वारा, **उनका भाग उनके मूलपुरुष के कुल के गोत्र के अधिकार** में बना रहा।

"परमेश्वर विश्वास योग्य है!" (36:13)

[13]जो आज्ञाएँ और नियम यहोवा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर मूसा के द्वारा इस्राएलियों को दिए वे ये ही हैं।

आयत 13. गिनती का अन्तिम संदेश यह है कि ये नियम मूसा को परमेश्वर के द्वारा तब दिए गए थे जब इस्राएली **मोआब के अराबा** में कनान में प्रवेश करने की प्रतीक्षा कर रहे थे। यह वाक्यांश **जो आज्ञाएँ और नियम** सम्भवतः सम्पूर्ण पुस्तक का सन्दर्भ है, केवल अन्त के तीन या चार अध्यायों का नहीं। व्यवस्था की पुस्तक लैव्यव्यवस्था भी इन्हीं शब्दों के साथ समाप्त होती है (लैव्य. 27:34)।

राष्ट्र अब कनान देश में प्रवेश करने की ओर अग्रसर था। परमेश्वर इस नई पीढ़ी को सुरक्षित रूप से उस देश तक लाया था जिसकी प्रतिज्ञा उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से की थी। उनके आगे का कार्य परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए देश में प्रवेश करना, जीतना और उसके बाद उसमें बढ़ते रहना था। परमेश्वर ने उन्हें महान आशीषों से भविष्य की प्रतिज्ञा की थी यदि वे विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता में दृढ़ रहेंगे।

अनुप्रयोग

परमेश्वर पर केन्द्रित लोगों के लक्षण (अध्याय 26-36)

गिनती के पहले दस अध्याय प्रतिज्ञा किए गए देश की अपनी यात्रा के लिए इस्राएलियों की तैयारी पर ध्यान केंद्रित करते हैं। अन्तिम ग्यारह (अध्याय 26-36) वर्णन करते हैं कि देश के प्रतिज्ञा किए गए देश में प्रवेश करने के बाद इस्राएल के लिए जीवन कैसा होना चाहिए था। गिनती का यह खंड मोआब के मैदानों पर स्थित है, जहाँ इस्राएल ने डेरा खड़ा किया था, यरदन को पार करने और कनान को जीतने के लिए प्रतीक्षा कर रहा था। इन अन्तिम अध्यायों में, व्यवस्थाविवरण सहित, वे नियम सम्मिलित हैं जो परमेश्वर के लोगों को उस देश में प्रवेश करने के बाद जो परमेश्वर उन्हें दे रहा था नियंत्रित करने वाले थे। वे शब्द परमेश्वर और उसके वचन पर केंद्रित लोगों के समुदाय की विशेषताओं का सुझाव देते हैं। परमेश्वर-केंद्रित लोगों के लक्षण क्या हैं?

एक आराधक समाज। इस्राएल को एक आराधक समाज बनना था। प्रतिदिन, साप्ताहिक, मासिक और कुछ वार्षिक पर्वों पर बलिदान चढ़ाए जाने थे। इसके साथ ही, लोग पापों की क्षमा मांगने के लिए बलिदान लेकर आए और परमेश्वर के प्रति अपना आभार व्यक्त करने के लिए उन्हें स्वेच्छा बलियाँ दीं। गिनती में अन्य नियमों से पता चलता है कि याजकों और लेवियों, जिन्होंने इस्राएल की आराधना का नेतृत्व किया या इसकी सुविधा प्रदान की थी, उन्हें उनकी विशेष जिम्मेदारियों के साथ एक विशेष दर्जा प्रदान किया गया था।

एक-मन समाज। परमेश्वर ने इस्राएल को केवल उसके लिए समर्पित राष्ट्र के रूप में चुना। समाज के केंद्र में परमेश्वर का स्थान इस तथ्य के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है कि जंगल में परमेश्वर के निवास स्थान को छावनी के केंद्र में खड़ा किया गया था। परमेश्वर के नियम उनके जीवन के हर पहलू को नियंत्रित करते थे। एक-मन भक्ति की परमेश्वर की मंशा उसके लोगों द्वारा कनानी लोगों को बाहर निकालने की उसकी आज्ञा में परिलक्षित होती थी। मूर्तिपूजक निवासियों को बाहर निकालना आवश्यक था। यदि वे बने रहे, तो वे अन्य देवताओं की आराधना करने के लिए इस्राएल का नेतृत्व करेंगे। इस्राएली अन्य देवताओं के प्रतिनिधियों को उनके बीच रहने की अनुमति नहीं दे सकते थे।

एक जीवन का सम्मान करने वाला समाज। इस्राएल को जीवन का सम्मान करने वाले लोग बनना था। हत्या करने वालों को मार डालना था। जबकि अनजाने में मारने वाले को मृत्यु नहीं देनी थी, यहाँ तक कि उसने अपने कार्यों के कारण नकारात्मक परिणामों का अनुभव किया। वह शरण के एक नगर में भाग सकता था और वहाँ रह सकता था - लगभग घर की गिरफ्तारी के समान - जब तक कि महायाजक की मृत्यु न हो (जिसके कारण उसे कई वर्षों तक वहाँ रहना पड़ सकता था)। मानव जीवन ईश्वर की दृष्टि में इतना मूल्यवान है कि यदि कोई हत्या हो गई, तो उसके लोगों का देश अशुद्ध हो जाएगा (35:33, 34)।

एक सत्य कहने वाला समाज। व्यवस्था के अधीन इस्राएल को एक सत्य कहने वाला समाज बनना था। विशेष तौर पर, जो मन्नतें मांगी गई थीं उन्हें पूरा करना था। पुरुषों के अधीन स्त्रियों को कुछ आपत्तिजनक मन्नतों के मानने से छूट दी जा सकती थी, परन्तु सामान्य नियम यह था कि यदि किसी ने कुछ करने की मन्नत मानी थी तो उससे आशा की जाती थी कि वह अपने वचन को पूरा करे। इस्राएल में हर कोई परमेश्वर और समाज के प्रति उत्तरदायी था।

एक धर्मी समाज। इस्राएलियों को धर्मी, या निष्पक्ष, लोग बनना था। परमेश्वर इस बात पर मान गया कि यह केवल उचित था कि सलोफाद की बेटियों को उसके पिता का भाग प्राप्त करने की अनुमति दी जाए, परन्तु यह एक बेटी के लिए भी उचित था, जिसे अपने पिता की भूमि का भाग मिला था, वह अपने ही गोत्र के किसी व्यक्ति से विवाह करने के लिए प्रतिबंधित हो। परमेश्वर द्वारा निर्देशित, बड़े गोत्रों को छोटे गोत्रों की तुलना में बड़ा भाग मिलने के लिए, देश के बंटवारे लिए चिट्ठी का उपयोग यह उचित था। लेवियों के लिए नगरों को प्राप्त करना उचित था, क्योंकि लेवी गोत्र को भूमि का भाग नहीं मिला था।

उन 2½ गोत्रों के बीच जो यरदन के पूर्व में बस गए थे और बाकी इस्राएल के बीच यह समझौता उचित था। वे अपनी इच्छा के अनुसार भूमि रख सकते थे, परन्तु उन्हें शेष गोत्रों की यरदन के पश्चिम क्षेत्र पर विजय प्राप्त करने में सहायता करनी थी।

इसी तरह, युद्ध की लूट का वितरण उचित था। आधे को योद्धाओं द्वारा रखा जाना था, और दूसरा आधा मण्डली के लिए होगा जिसने उनकी लड़ाई में उनका सहयोग किया था (31:26, 27)। इसके अलावा, प्रत्येक आधे का भाग परमेश्वर को दिया गया (31:28-30)।

जिन्होंने लोगों की हत्या की थी, उनके साथ उचित व्यवहार किया गया। एक हत्यारे के लिए उसके जीवन के साथ अपने अपराध के लिए दण्ड भरना उचित था, परन्तु यह उचित था कि एक व्यक्ति जिसने किसी को अनजाने में मार दिया था, उसे मारा नहीं जाएगा।

यह, इसके बाद, इस्राएल के प्रतिज्ञा किए गए देश को जीत लेने और उसमें निवास करने के बाद ऐसा दिखना चाहिए था: उन्हें एक ऐसे राष्ट्र का गठन करना चाहिए था जो निरन्तर परमेश्वर की आराधना करता था और एक-मन के लिए समर्पित था - एक नैतिक और धर्मी लोग जो सत्य, मानव जीवन का सम्मान करते थे, और दुर्भावनापूर्ण हत्या और झूठ पर दण्ड देते थे।

हम अपने समय के लिए इन आवश्यकताओं को किस प्रकार लागू कर सकते हैं?

1600 के दशक में तीर्थ यात्रियों ने अमेरिका को एक तरह की नए प्रतिज्ञा के देश के रूप में देखा और स्वयं को परमेश्वर के लोगों के रूप में देखा। उन्होंने परमेश्वर के द्वारा शासित एक गणतन्त्र की स्थापना करने की मांग की, जो कुछ-कुछ इस्राएल देश के समान था। हालाँकि किसी भी देश के व्यवस्थापकों को यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना कि इसके नियम उचित और निष्पक्ष हैं और परमेश्वर की महिमा

करते हैं इसमें कुछ भी गलत नहीं, आज कोई भी धर्मनिरपेक्ष देश बाइबल के इस्राएल के समकक्ष नहीं है। परिणामस्वरूप, यद्यपि गिनती में पाए जाने वाले नियमों के पीछे के सिद्धांत किसी देश के नियमों के निर्माण में सहायक हो सकते हैं, इन नियमों का सबसे अच्छा अनुप्रयोग किसी भी धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के लिए नहीं है। पुराने नियम के नियमों को आज लोगों पर लागू करने के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोग अविश्वासियों को परमेश्वर की आराधना करने के लिए विवश करने का प्रयास करेंगे, जो भूतकाल में हुआ था। परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी आराधना करें, परन्तु उसकी इच्छा है कि हम अपनी स्वेच्छा से आएं।

चूंकि कलीसिया आज पुराने नियम के इस्राएल के बराबर है (देखें 1 पतरस 2:5, 9), पुराने नियम की व्यवस्था के सिद्धांतों को कलीसिया में लागू करना उन्हें किसी भी विशिष्ट राष्ट्र में लागू करने से अधिक उपयुक्त होगा। वास्तव में, गिनती के अन्तिम अध्यायों में वर्णित परमेश्वर-केंद्रित समाज के कई लक्षण कलीसिया में भी दिखाई पड़ने चाहिए। उदाहरण के लिए, हमें एक आराधना करने वाला समाज होना चाहिए। हमें एक परमेश्वर-केंद्रित व्यक्ति होना चाहिए, जो परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित हो। एक समूह के रूप में, हमें जीवन को महत्व देना चाहिए, सत्य को महत्व देना चाहिए और न्याय का पीछा करना चाहिए। कलीसिया के भीतर हमें एक दूसरे के साथ उचित व्यवहार करने की आवश्यकता है। हमें सत्य को बोलना है और एक दूसरे से अपनी मन्नत पूरी करनी है, और हमें अपने भाइयों और बहनों के जीवन को मसीह में महत्व देना चाहिए।

सम्भवतः गिनती के बाद के अध्यायों का अनुप्रयोग करने का सबसे अच्छा तरीका है, इन विशेषताओं को व्यक्तिगत मसीही के रूप में प्रदर्शित करना। हमें स्वयं से निम्नलिखित प्रश्न पूछने चाहिए:

"क्या मैं परमेश्वर की भक्ति में एक-मन हूँ, या मेरी निष्ठा परमेश्वर और संसार के बीच विभाजित है?"

"क्या मैं अपने जीवन में किन्हीं ऐसी 'मूर्तियों' से छुटकारा पाने के बारे में चिंतित हूँ, जो परमेश्वर के प्रति मेरी सेवा से मुझे भटकाती हैं?"

"क्या मैं सदैव सत्य कहता हूँ?"

"क्या मैं मानव जीवन का सम्मान करता हूँ, इस भाव से कि मैं किसी भी ऐसे कार्य को करने के प्रति सावधान हूँ जो अन्य मनुष्यों के जीवन को खतरे में डालेगा?"

"क्या मैं दूसरों से अपने व्यवहार में निष्पक्ष होने का प्रदर्शन करता हूँ?"

इन प्रश्नों को हमारे विवेक में चुभना चाहिए और हमें मसीह के लिए और अधिक करने के लिए निश्चय करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

उपसंहार। गिनती 26-36 में परमेश्वर ने इस्राएल को वह चित्र दिया जो वह उन्हें बनाना चाहता था: एक परमेश्वर केन्द्रित लोग। दुर्भाग्यवश, इस्राएल शायद ही कभी, उस आदर्श पर खरा उतरा। आज, परमेश्वर हमारे सामने नए नियम के

सटीक मानकों को रखता है, जिन्हें पूरा करने की आशा वह हमसे करता है। वह चाहता है कि कलीसिया, और हम व्यक्तिगत सदस्यों के रूप में, परमेश्वर-केंद्रित जीवन का नेतृत्व करें।

"तेरा तेजस्वी नाम धन्य रहे"

जंगल और परमेश्वर की देखभाल में इस्राएल के अनुभव के विवरण ने बाद की पीढ़ियों को प्रभावित किया। नहेम्याह के दिनों में, जब इस्राएल के वंशज अपना पाप मान रहे थे, परमेश्वर ने जंगल में इस्राएल से जिस तरह से प्रेम किया था और उसकी देखभाल की थी उसके लिए कई लेवियों ने परमेश्वर का आभार व्यक्त किया। उन्होंने परमेश्वर की स्तुति का एक गीत गाया जिसमें निम्नलिखित बातें सम्मिलित थीं:

> "उनकी भूख मिटाने को आकाश से उन्हें भोजन दिया और उनकी प्यास बुझाने को चट्टान में से उनके लिये पानी निकाला, और उन्हें आज्ञा दी कि जिस देश को तुम्हें देने की मैं ने शपथ खाई है उसके अधिकारी होने को तुम उसमें जाओ। परन्तु उन्होंने और हमारे पुरखाओं ने अभिमान किया, और हठीले बने और तेरी आज्ञाएँ न मानी; और आज्ञा मानने से इनकार किया, और जो आश्चर्यकर्म तू ने उनके बीच किए थे, उनका स्मरण न किया, वरन् हठ करके यहाँ तक बलवा करने वाले बने, कि एक प्रधान ठहराया कि अपने दासत्व की दशा में लौटें। परन्तु तू क्षमा करने वाला अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करने वाला, और अति करुणामय ईश्वर है, तू ने उनको न त्यागा। वरन् जब उन्होंने बछड़ा ढालकर कहा, 'तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है, वह यही है,' और तेरा बहुत तिरस्कार किया, तब भी तू ने, जो अति दयालु है, उनको जंगल में न त्यागा; न तो दिन को अगुवाई करने वाला बादल का खम्भा उन पर से हटा, और न रात को उजियाला देनेवाला और उनका मार्ग दिखाने वाला आग का खम्भा। वरन् तू ने उन्हें समझाने के लिये अपने आत्मा को जो भला है दिया, और अपना मन्ना उन्हें खिलाना न छोड़ा, और उनकी प्यास बुझाने को पानी देता रहा। चालीस वर्ष तक तू जंगल में उनका ऐसा पालन पोषण करता रहा कि उनको कुछ घटी न हुई; न तो उनके वस्त्र पुराने हुए और न उनके पाँव में सूजन हुई। फिर तू ने राज्य राज्य और देश देश के लोगों को उनके वश में कर दिया, और दिशा दिशा में उनको बाँट दिया; यों वे हेशबोन के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग दोनों के देशों के अधिकारी हो गए। फिर तू ने उनकी सन्तान को आकाश के तारों के समान बढ़ाकर उन्हें उस देश में पहुँचा दिया, जिसके विषय तू ने उनके पूर्वजों से कहा था कि वे उस में जाकर उसके अधिकारी हो जाएँगे" (नहेम्य. 9:15-23)।

परमेश्वर महान और शक्तिशाली, भला और परोपकारी, देखभाल करने वाला और प्रेम करने वाला है। आइए हम उसका धन्यवाद और उसकी प्रशंसा करें!

समाप्ति नोट

[1]जुलियस एच. ग्रीनस्टोन, *गिनती*, द होली स्क्रिपचर्स विद कमेन्ट्री (फ़िलाडेल्फ़िया: जूइश पब्लिकेशन सोसाइटी ऑफ़ अमेरिका, 1939), 362. [2]डब्लू. एच. बेलिंगर, जूनियर, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेंट्री (पीबॉडी, मासाचुसेट्सः हेन्ड्रिक्शन पब्लिशर्स, 2001), 31. [3]जॉन एच. वाल्टन, विक्टर एच. मैथ्यूजएण्ड मार्क डब्ल्यू. शावालास, *दIVP बाइबल बैकग्राउंड कमेंट्री: ओल्ड टेस्टमेंट* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: वर्सिटी इंटर प्रेस, 2000), 170. [4]कैथरीन क्लार्क क्रोएगर एण्ड मैरी जे. इवान्स, ऐड्स. *द IVP विमेन्स बाइबल कमेंट्री* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर वर्सिटी प्रेस, 2002), 81. [5]जेकब मिलग्रोम, *गिनती*, द जेपीएस तोराह कमेंट्री [फिलाडेलफियाः ज्यूविश पब्लिकेशन सोसाइटी, 1990], 230.